विचार बिन्दु

जो सच्चाई पर निर्भर है वह किसी से घृणा नहीं करता। –नेपोलियन

आयुर्वेद की ग्रीष्म ऋतुचर्या

ऋतुचर्या प्राकृतिक कारणों से उत्पन्न जोखिम को कम करने की रणनीति है। ग्रीष्म ऋतु आने वाली है, अत: स्वास्थ्य रक्षण के लिये हर ऋतु की तरह ग्रीष्म ऋतु में भी जीवन-शैली में कुछ बदलाव लाने आवश्यक होंगे। आइये सबसे पहले यह देखते हैं कि यह बदलाव क्यों आवश्यक है और आयुर्वेद में ऋतुचर्या किन सिद्धांतों को ध्यान में रखकर तय की गयी है। लगभग 5000 साल पहले तय की गयी ऋतुचर्या क्या आज भी उपयोगी है? संक्षेप में देखें तो पहली बात यह है आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि पुरुषलोक के समान है (च.शा.5.3:पुरुषोऽयं लोकसम्मित:) इस सिद्धांत के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता (च.शा.5.3:लोकपुरुषयो: सामान्यम्) होने से सामान्य-विशेष का सिद्धांत कार्य करता है। अर्थात सामान भावों को सामान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अंदर प्रकृति को व प्रकृति के अंदर स्वयं को देखा जाये (च.शा.5.7): सर्वलोकमात्मन्यात्मानं च सर्वलोके सममनुपश्यत: सत्या बुद्धि: समुत्पद्यते। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमेंछ: धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं (च.शा.5.7):षड्धातुसमुदायो हि सामान्यत: सर्वलोक:। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है।

इन आयुर्वेदिक सिद्धांतों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो पर्यावरण और पारिस्थिक तंत्र के साथ मानव के रिश्तों की अनवरत सार-संभाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। इसे साधारण शब्दों में यों समझें कि यदि हवा, पानी, तापक्रम, मिट्टी, पेड़-पौधों में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होते हैं तो हमें भी उसके अनुसार जीवन-शैली और खान-पान और पहनावे में परिवर्तन करना पड़ता है। यह परिवर्तन या अनुकूलन ही धातुसाम्य रखता है। यही अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है।

आज की चर्चा मई-मध्य से जुलाई-मध्य के ग्रीष्म काल पर है, जिसके मुख्य शास्त्रीय स्त्रोत चरकसंहिता (च.सू.6.27-32), सुश्रुतसंहिता (सु.उ.64.40-45) एवं अष्टांगहृदय (अ.हृ.सू.3.26-41)हैं। प्रकाशित समकालीन वैज्ञानिक शोध औरआयुर्वेदाचार्यों का अनुभवजन्य ज्ञान भी यहाँ समाहित है (च.सू.6.27-32): मयूखैर्जगत: स्नेहं ग्रीष्मे पेपीयते रवि:। स्वादु शीतं द्रवं स्निग्धमन्नपानं तदा हितम्।। शीतं सशर्करं मन्थं जाङ्गलान्मृगपक्षिण:। घृतं पय: सशाल्यन्नं भजन् ग्रीष्मे न सीदति।। मद्यमल्पं न वा पेयमथवा सुबहूदकम्। लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामं च विवर्जयेत् ।। दिवा शीतगृहे निद्रां निशि चन्द्रांशुशीतले। भजेच्चन्दनदिग्धाङ्ग: प्रवाते हर्म्यमस्तके।। व्यजनै: पाणिसंस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलै:। सेव्यमानो भजेदास्यां मुक्तामणिविभूषित:।। काननानि च शीतानि जलानि कुसुमानि च। ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नर:।।

ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें अत्यन्त तीक्ष्ण होने से वातावरण के तापमान को बढ़ा देती हैं, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण और द्रव्यों से जल का अंश धीरे-धीरे कम होने लगता है। यही कारण है कि इस ऋतु में कफ का क्षय तथा वात की वृद्धि होती जाती है। बल में कमी तथा अग्नि सामान्य रहती है। यहाँ यह बताना उपयोगी होगा कि विश्व के 245 शहरों के आँकड़े बताते हैं कि हीटवेव या लू के कारण प्रतिवर्ष 12000 से अधिक लोग मृत्यु को प्राप्त होते हैं। अर्बन हीट आइलैंड इफ़ेक्ट के कारण प्राय: आसपास के क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में तापमान 3.5 से 12 डिग्री सेंटीग्रेड तक अधिक होने लगता है। इसके कारण लगभग 3 मिलियन लोगों की मृत्यु प्रतिवर्ष होती है। भारत में मई 1998 की ऐतिहासिक हीट वेव जिसमें देश ने दो सप्ताह तक गंभीर गर्मी की लहर का अनुभव किया, वह तत्समय में पिछले 50 वर्षों में सबसे खतरनाक थी। जलवायु परिवर्तन की दशा में भारत सहित पूरी दुनिया में हीट वेव की आवृत्ति, तीव्रता और अवधि में बढ़ोत्तरी, और परिणामस्वरूप मृत्यु बढ़ने की आशंका है। भारत में वर्ष 2009-2010 का सूखा और गर्मी की लहर रूस की रिकार्ड-तोड़गर्मी के टक्कर की थी। भारत के 640 जिलों में से हीट वेव के सन्दर्भ में 10 बहुत अधिक और 97 बहुत जोखिम वाले जिलों की श्रेणी में आते हैं। सामान्य जोखिम तो देश भर में है। शोध से ज्ञात होता है कि किसी दिन तापमान में 10 डिग्री फैरेनहीट की बढ़त उसी दिन हृदय रोगों, स्ट्रोक, श्वसन रोग, निमोनिया, निर्जलीकरण, गर्मी से स्ट्रोक, मधुमेह और गुर्दे की विफलता सहित कई बीमारियों के लिये अस्पताल में भर्ती होने का खतरा बढ़ जाता है। गर्मी की बढ़त से वर्ष 2100 तक वैश्विक जी.डी.पी. के 20 प्रतिशत तक हानि की आशंका है।

खाद्य पदार्थों में ग्रीष्म ऋतु में मधुर रस प्रधान, स्वादिष्ट, शीतल और स्निग्ध अन्नपान हितकारी होता है। उदाहरण के लिये, शालि-चावल के भात में घी या दूध में मिलाकर खाना बहुत स्वादिष्ट लगता है। यह ध्यान देना आवश्यक है कि किसी भी ऋतु में प्रत्येक भोजन में सभी छः रसों का होना आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतु में शीतल, स्निग्ध और मधुर रस प्रधान स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों को प्रधानता देते हुये अन्य रसों को भी थोड़ी मात्रा में ग्रहण करना चाहिये।

ग्रीष्म ऋतु में कठोर शारीरिक श्रम, व्यायाम व सहवास आदि की अति से बचना चाहिये। धूप में अधिक देर तक समय नहीं गुजारना चाहिये। लवण, कटु एवं अम्ल रसों की प्रधानता वाले द्रव्य, शुष्कताकारक व उष्णपदार्थों का उपयोग छोड़ देना श्रेयस्कर है। अल्कोहल का प्रयोग भी नहीं करना चाहिये, यदि करें तो बहुत कम मात्रा में, और उसमें भी बहुत पानी मिलाकर ही उपयोग करें। अन्यथा शोथ, शिथिलता, दुर्बलता, दाह व मोह जैसी समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

पेय पदार्थों में रायता एवं खाण्ड (खट्टे, मीठे, नमकीन द्रव्यों का घोल) इक्षुशर्करा या खाण्ड मिला हुआ सुंगधित एवं शीतल पानक या पन्ना लाभकारी है। मंथ अर्थात घी-युक्त सत्तू का शीतल जल में बनाया गया हल्का गाढ़ा घोल जिसमें इक्षुशर्करा, खाण्ड या शहद भी मिलाई जा सकती है, लिया जा सकता है। ठंडा होने के लिये केला या महुआ के पत्तों से ढके हुये मिट्टी के नये बर्तन में अम्ल-रसयुक्त पन्ना या शर्बत भी कुछ समय रखकर पिया जा सकता है। मधु, द्राक्षा (दाख या मुनक्का), फालसा, आमलकी (आँवला) खण्ड (खांड़) को शीतल जल में मथ कर पंचसार बनाया जाता है। इसे मिट्टी के सकोरे में पीने का आनंद लीजिये। स्वाद हालाँकि व्यक्तिगत मामला है, पर पंचसार में यदि एक चुटकी सैन्धव लवण डाल दें तो इससे स्वादिष्ट, तृप्तिकर, पौष्टिक और शीतल पेय दुनियाभर में उपलब्ध नहीं है। यह उच्चकोटि का एंटीऑक्सीडेंट होने के कारण ऑक्सीडेटिव-स्ट्रेस को कम करने वाला स्वादिष्ट रसायन भी है। पाढ़ल के पुष्पों से सुगंधित, पुदीना या कर्पूरयुक्त शीतल जल पिया जा सकता है। रात में भैंस के दूध में खाण्ड मिलाकर ठंडा कर पिया जा सकता है। बाजारू कृत्रिम शीतल पेय से छुटकारा पाना ही श्रेयस्कर है।

खाद्य पदार्थों में ग्रीष्म ऋतु में मधुर रस प्रधान, स्वादिष्ट, शीतल और स्निग्ध अन्नपान हितकारी होता है। उदाहरण के लिये, शालि-चावल के भात में घी या दूध में मिलाकर खाना बहुत स्वादिष्ट लगता है। यह ध्यान देना आवश्यक है कि किसी भी ऋतु में प्रत्येक भोजन में सभी छ: रसों का होना आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतु में शीतल, स्निग्ध और मधुर रस प्रधान स्वादिष्ट भोज्य पदार्थों को प्रधानता देते हुये अन्य रसों को भी थोड़ी मात्रा में ग्रहण करना चाहिये।

ग्रीष्म ऋतु में शरीर में चन्दन का लेप करना, सूक्ष्म व लघु वस्त्र पहनना व माला धारण करना लाभकारी रहता है। शीतल घरों में निवास, विशेषकर ऐसे कक्ष जिनमें जलधारा प्रवाहित हो रही हो, ऐसी शिल्प कलाकृतियों से सज्जित कक्ष जिनमें से मंद जलधारा प्रवाहित हो रही हो, में विश्राम करने का ग्रीष्मकालीन आनन्द अवर्णनीय है। रात्रि में सोने हेतु चन्द्रमा की शीतल किरणों से ठंडी हुई घर की छत पर सोने का आनन्द भी लिया जा सकता है। हालाँकि शहरों में औद्योगिक व यातायातीय वायु प्रदूषण की गंभीर समस्या है। प्रदूषित वायु में निलंबित श्वसनीय विविक्त कणों की मात्रा भारत की परिवेशी वायु गुणवत्ता को हानिकारक स्तर पर ले जा रही है। अत: खुले स्थान पर वहीं सोयें जहाँ प्रदूषण मानक स्तरों के अंदर हो। ऐसी आशंका है कि वायु प्रदूषण वर्ष 2050 तक लगभग 6.6 मिलियन समय पूर्व मृत्यु के लिये उत्तरदायी होगा। प्रदूषित वायु में पीएम-2.5 कणों के कारण विश्वभर में 33 लाख लोगों की मृत्यु होती है, इनमें से अधिकाँश एशिया महाद्वीप में हैं। भारत में विश्व की 24 प्रतिशत वार्षिक बाल मृत्य दर मुख्य रूप से श्वसन तंत्र में संकमण के कारण होती है। वर्ष 2010 में घरों के अन्दर वायु प्रदूषण के कारण 3.9 मिलियन लोगों की मृत्यु होने का आकलन किया गया है।वर्ष 2015 में प्रकाशित एक महत्वपूर्ण शोध में यह पाया गया है कि लगभग 66करोड़ भारतीय, जो भारत की आधी जनसंख्या है, उन क्षेत्रों में निवास करती है जहाँ निलंबित विविक्त कणों के कारण प्रदूषण का स्तर राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों से अधिक है। वायु प्रदूषण के कारण कार्डियोपल्मोनरी रोग, फेफड़ों के कैंसर आदि अनेक रोग होते हैं। अत: हमें अपनी दिनचर्या को इस प्रकार ढालना चाहिये कि प्रदूषणकारी तत्वों के संपर्क में कम से कम आयें।

ग्रीष्म ऋतु में हालाँकि कठोर शारीरिक श्रम व व्यायाम वर्जित हैं, परंतु तालाबों, नदियों अैर वापी या बावड़ियों के समीप रह कर शीतलता का लाभ लिया जा सकता है। दोपहर की तेज धूप में सघन वितान वाले विशालकाय शाल, तमाल, ताल आदि प्रजातियों के वृक्षों की छाया में, जहां सूर्य की किरणें न पहुंच पायें, रहा जा सकता है। प्रात: उपवन में घूमते हुये फूलों एवं जलाशयों का आनन्द लिया जा सकता है। मनोहारी उपवन में पक्षियों के कलरव के मध्य मीठी व तोतली बोली बोलने वाले बाल-बच्चे धमा-चौकड़ी कर रहे हों तो आनंद ही आनंद है। परिवार के प्रिय सदस्यों और अन्तरंग मित्रों का साथ सुखद रहता है। चन्दन के पानी से शीतल किये हुये कमल या ताड़ के पत्तों से बने पंखों की मंद शीतल हवा और उनसे गिरते हुये जल के कणों का आनंद अवश्य लेना चाहिये। गर्मी आने वाली है। इन सब बातों का ध्यान रखकर ग्रीष्म ऋतु में स्वयं को दोष संचय से बचाते हुये को स्वस्थ व सुखी रखा जा सकता है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय,
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

डॉ. केशव राव हेडगेवार सच्चे देशभक्त थे

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्थापना की शताब्दी पर विशेष....

शंकर अग्रवाल

"न्यायालय में सरकारी वकील से पूछा था, वास्तव में ऐसा कोई कानून है क्या कि जिसके बल पर एक देश के लोग दूसरे देश में जाकर उन पर बलपूर्वक शासन करें? यह बात प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्त के विरूद्ध नहीं है तो और क्या है? अंग्रेजों को यह अधिकार किसने दिया कि भारत के लोगों को पैरों तले रौंद कर उन पर जोर जबरदस्ती शासन करें? जिस प्रकार इंग्लैंड के लोग इग्लैंड पर, फ्रांस के लोग फ्रांस पर शासन करते हैं वैसे ही हम भारत के लोगों पर भारत का शासन चाहते हैं अन्य बाहरी लोग उसके अधिकारी नहीं है।

हमें पूर्ण स्वतन्त्रता चाहिए और वह हम लेकर रहेगें एवं वह हमें मिलेगी, इसमें संदेह नहीं है।" इन जलते हुए अंगारों के पड़ते ही मजिस्ट्रेट साहब बोल उठे "This statement is more sedicious than his speech" अर्थात् इनके मूल भाषण की अपेक्षा न्यायालय में दिया वक्तव्य अधिक कड़वा व राजद्रोह पूर्ण है। केशव को दोषी करार देकर राजद्रोह के अपराध में एक वर्ष की कठोर सजा दी गई। यह वक्तव्य दिया 1921 में एक अदालत में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलीराम हेडगेनार ने दिया। इससे स्पष्ट होता है कि उनके मन में देश की आजादी व अंग्रेजों के विरूद्ध कितनी कठोर ज्वाला उनके हृदय में धधक रही थी। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव बलीराम हेडगेनार का जन्म 01 अप्रेल 1889 में हुआ व देहान्त 21 जून 1940 में हुआ, लेकिन 51 वर्ष की अल्पआयु में इतने बडे संगठन की कल्पना व उसे साकार करना एक बडी चुनौती थी। उनके जीवन में बाल्यकाल से ही देशभक्ति कूट-कूट कर कुदाले मार रही थी। 22 जून 1897 में इंग्लैंड की महारानी विक्टोरिया का 60वां जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय में बच्चों को मिठाई बांटी गई। बच्चों ने मिठाई बडे चाव से खाई लेकिन बालक केशव ने मिठाई कूड़ेदान में डाल दी। उसका कहना था कि न हमारी महारानी है न हमें खुशी, किस बात का जश्न।

बाल्यावस्था में नागपुर के सीताबडी किले पर यूनियन जैक लहराता देख बालक केशव का मन बार-बार कसोट रहा था। बालक केशव ने अपने बाल साथियों के साथ उसे उतारकर भगवा ध्वज फहराने की योजना अनुसार 7-8 साथियों को लेकर अध्ययन हेतु अध्यापक के घर जाते, उसी के एक कमरें से सुरंग खोदकर किले तक पहुंच भगवा लहराने की योजना बनाई, एक दिन सुरंग को देख अध्यापक महोदय ने उन्हें समझा-बुझाकर शांत कर दिया। अध्यापक महोदय ने उस समय कहा था कि यह बालक केशव एक दिन किसी हिन्दू संगठन को जन्म देगा और ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला देने वाला कार्य करेगा।

सोलह वर्ष की आयु में केशव नागपुर के पिंकसिटी हाई स्कूल में दसवीं कक्षा में अध्ययन कर रहे थे। इसी स्कूल में वन्दे मातरम उद्घोष पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। केशव ने इसका विरोध करने की योजना बनाई, सारी योजना गुप्त रखी गई। जैसे ही शिक्षा निरीक्षक और स्कूल के अध्यापक निरीक्षण के लिए कक्षा में आये, सभी बालकों ने वन्दे मातरम का जोरदार उद्घोष किया एवं यही उद्घोष अन्य कक्षाओं में भी गूंजा।

अंत में जांच करने पर कुछ पता नहीं लगा कि इस उद्घोष के पीछे कौन है लेकिन केशव ने स्वयं अपना नाम आगे किया व स्कूल से निकाले जाने की सजा मिली। केशव को माफी के लिये मजबूर भी किया कि वे क्षमा मांग ले, पर उसने कहा वन्दे मातरम बोलना मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है व इससे पीछे नहीं हटूंगा।

स्कूल से निष्कासन के बाद भी बालक केशव ने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों को विराम नहीं दिया व निरन्तर इसी उधेड़बुन में रहे कि मेरा देश कैसे आजाद हो व अंग्रेजों का आधिपत्य कैसे समाप्त हो। उस राष्ट्रभक्त नेताओं में लोकमान्य तिलक, महर्षि अरविन्द और डॉ. मुंजे 3/5 दूसरे विद्यालय में प्रवेश के बाद स्कूली शिक्षा पूर्ण कर केशव डॉक्टरी की पढ़ाई हेतु कलकत्ता चले गए। कलकत्ता जाने का मुख्य उद्देश्य क्रांतिकारी संगठनों से जुड़ना था। उनकी नेतृत्व क्षमता का आभास इसी से होता है कि उनके निवास पर सुभाष चन्द बोस जैसे बड़े नेता भी उनसे मिलने व विचार-विमर्श हेतु आते थे।

सन् 1915 में डॉक्टरी की डिग्री लेकर केशव राव नागपुर आ गये। वह चाहते तो अच्छी डॉक्टर की प्रेक्टिस कर सकते थे व धन कमा सकते थे लेकिन उनके मन में तो आजादी की ज्वाला धधक रही थी, अत: उन्होंने परिवार के अनेक दबाव के बाद भी शादी नहीं करना व डॉक्टर बनकर पैसा कमाना दोनों रास्ते सदा के लिये बन्द कर दिये व आजादी के आंदोलन में कूद पड़े।

इस आंदोलन में डॉ. साहब एक बार नहीं अनेक बार जेल गये, लेकिन अंग्रेजों की गुलामी स्वीकार नहीं कर हमेशा उसका प्रतिकार किया। एक बार जब डॉ. साहब जेल से छूटे तो उनके सम्मान समारोह में पं. मोतीलाल नेहरू व लोकमान्य तिलक स्वयं स्वागत हेतु मंच पर आसीन हुये।

उपरोक्त घटनाओं जिनका वर्णन किया गया, यह देशभक्ति का मात्र नमूना है। डॉक्टर साहब जीवन पर्यन्त देश सेवा में लगे रहे। कांग्रेस में कार्य करते हुये आजादी के आंदोलन में प्रमुख भूमिका निभाई। सन् 1920 में नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में आप ही ने पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव लाने का आग्रह किया व पूरे जोर से पूर्ण स्वराज की मांग की, लेकिन यह प्रस्ताव पारित नहीं हो सका, जिसे दस वर्ष बाद कांग्रेस ने लाहौर अधिवेशन में 19 दिसम्बर 1929 को पारित किया व 26 जनवरी 1930 को इसकी सार्वजनिक घोषणा की गई। उपरोक्त प्रस्ताव काफी विलम्ब से पारित हुआ।

इसके पश्चात् डॉ. साहब के मन में ख्याल आया कि आजादी तो हमें देर-सवेर मिल जायेगी। इस आजादी को कायम रखना कठिन होगा व आजादी मिलने के बाद भी हम वापिस गुलाम नहीं होंगे, इसकी क्या गारंटी है। उनका विचार था इस कार्य हेतु हमारे समाज खासतौर से हिन्दू समाज को संगठित व जागरूक करना होगा, तभी हमारी आजादी कायम रह सकेगी। आजादी का सही अर्थ भी हमारे समाज को मजबूत व संगठित करना होगा।

इसी भाव को लेकर डॉक्टर साहब ने 1925 को विजयादशमी के दिन चार बाल स्वयं सेवको को लेकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की स्थापना की। आज वही संगठन अपने सौ वर्ष पूर्ण करने जा रहा है एवं आज विपक्षी दल अनेक बार आवाज उठाते हैं की संघ का आजादी के आंदोलन में कोई सहयोग नहीं रहा जबकि संघ संस्थापक स्वयं कांग्रेस में काम करते थे व अनेकों बार देश की आजादी के लिए जेल गये।

आज वीर सावरकर जैसे देशभक्त को माफीवीर व भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू को आतंकवादी कहा जाता है। जबकि उपरोक्त सभी देशभक्त थे व आजादी के लिए अपने तरीके से अलग-अलग लडाई लड़ रहे थे। नेताजी सुभाष चन्द बोस भी कांग्रेस से अलग होकर देश की आजादी के लिए आजाद हिन्द फौज की स्थापना की व अंग्रेजी सरकार को कमजोर करने में लगे थे, ताकि अंग्रेज फौज कम होगी तो भारत पर उनकी पकड़ कमजोर होगी। अत: मत भिन्नता का अर्थ आज विपक्षी दल स्वतंत्रता सेनानियों को देशद्रोही, आतंकवादी, अलगाववादी कहे, यह उपयुक्त नहीं।

डॉ. साहब ने भले ही संघ स्थापना के पन्द्रह वर्ष बाद ही दुनिया को विदा कहकर चले गये। आज उनके लगाये पौधे से अनेक शाखाऐं व पेड़ खड़े हो गये। आज संघ के पास देशभर में अस्सी हजार शाखाएँ, एक लाख साठ हजार सेवाकार्य, करोड़ों कार्यकर्ताओं का बल है। गांधी हत्या के बाद 1948, इन्दिरा जी द्वारा आपातकाल के नाम पर 1975 से 1977 तक संघ पर प्रतिबंध व लाखों कार्यकर्ताओं को जेल में डालने के बाद भी संघ अपने पथ से विचलित नहीं हुआ। 1992 में भी बावरी ढांचा टूटने पर ऐसा ही प्रतिबंध लगा था।

तीन बार प्रतिबंध में एक भी बार संघ अथवा संघ के किसी कार्यकर्ता को दोषी नहीं पाया गया। आज विद्यार्थी परिषद्, बनवासी कल्याण परिषद्, विश्व हिन्दू परिषद, भारतीय मजदूर संघ, भारतीय किसान संघ, शिक्षा भारती प्रज्ञा प्रवाह आदि अनेक संगठन समाज सेवा में सक्रिय हैं एवं अपने-अपने राज्य में विश्व स्तर पर एक स्थान रखते हैं। आज देश का नेतृत्व इसी संघ से मिले कार्यकर्ताओं के हाथ में है। राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री व अनेक प्रान्तों के मुख्यमंत्री इसी धारा से शिक्षण पाकर देश सेवा में जुटे है। धन्य है ऐसे देशभक्त व युगपुरूष केशव को।

–सी.ए. शंकर अग्रवाल

राजस्थान रो विश्वास, विकास रे साथ

डॉ. निमिषा गौड़

रंग रंगीले राजस्थान की माटी में साहस-शौर्य की सुगंध बसी है, जहाँ शूरवीरों और वीरांगनाओं की गाथाएँ अनगित कहानिया बुनती है। भौगोलिक विशालता से समृद्ध इस भूमि में मेवाड़ के राणा सांगा और महाराणा प्रताप का अदम्य शौर्य गूंजता है। हाड़ौती की कला और किले इतिहास की भव्यता को दर्शाते हैं। मारवाड़ की संस्कृति और मरू भूमि अपनी अनूठी पहचान बनाये हुए है। शेखावाटी की हवेलियां स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। ढूंढाड़ की रणभेरी आज भी गूंजती प्रतीत होती है। मेवात क्षेत्र का वेभवशाली इतिहास गौरवशाली परम्पराओं को संजोये हुए है। गोडवाड़ के व्यापारिक मार्गों ने इसे एक महत्वपूर्ण आर्थिक केन्द्र बनाया है। भगवान श्री कृष्ण की धरती बृज क्षेत्र के अध्यात्म की गाथाएं दुनियाभर के आकर्षण का केन्द्र रही हैं। यह बहुसांस्कृतिक राज्य अपनी आंतरिक विविधताओं में अद्वितीय है, जहां भेष-भाषा और भोजन हर कुछ किलोमीटर पर बदल जाता है। ऐसे राजस्थान की सांस्कृतिक सभ्यता की पहचान किसी परिचय की मोहताज नहीं है।

'पधारो म्हारे देस' का वाक्यांश राजस्थान की अतिथि सत्कार परंपरा को संजोता है। ऐसे आत्मीय राजस्थानवासीयों के लिये विकसित राज्य की प्रतिबद्धता सुशासन से ही सिद्ध होगी, और यही विश्वास, विकास का पथ बनेगा। इसके लिए आधारभूत सुविधाओं के साथ साथ ढांचागत विकास आवश्यक है। एकीकरण के 76 वर्ष बाद भी पेयजल, बिजली, सड़क, स्वास्थ्य, भोजन जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से लेकर कृषि, उद्यम, शिक्षा एवं ऊर्जा, डेयरी क्षेत्रों में 5-6 दशकों से प्रयास हो रहे थे, फिर भी अपेक्षित परिणाम अब तक दूर प्रतीत होते थे।

पिछले एक वर्ष के आंकलन से स्पष्ट होता है कि राजस्थान सरकार के ऐतिहासिक और साहसिक निर्णयों ने राज्य को विकास के नये पायदान पर पहुंचा दिया है। थार मरूस्थल की धरा पर नदियों का प्रवाह कभी स्वप्न जैसा प्रतीत होता था, और पूर्ववर्ती सरकारें नदी जल समझौते पर आरोप-प्रत्यारोप में उलझी रही। किन्तु अब मुख्यमंत्री ने रामजल सेतु लिंक परियोजना पर सर्वसम्मति से 17 दिसम्बर, 2024 को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति में एम.ओ.यू. किया। यह परियोजना राजस्थान के 17 जिलों में 3.25 करोड़ लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के साथ-साथ 2.5 लाख हैक्टेयर कृषि भूमि की सिंचाई के लिए अतिरिक्त जल सुनिश्चित करेगी, जिससे राज्य में जलसंकट का स्थायी समाधान मिलेगा। इसी कारण कहा जाने लगा है कि अब मरूधरा सुजलाम् सुफ्लाम् बनेगी।

कृषि क्षेत्र में नवाचार के तहत पंच-गौरव योजना लागू की गई है जो सम्पूर्ण कृषि विकास की आधारशिला बनी है। प्रत्येक जिले के लिए एक विशिष्ठ फसल, वनस्पति प्रजाति, उत्पाद, पर्यटन स्थल और खेल पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है। संतुलित विकास को गति देने के लिए कृषि, पर्यटन और जल संसाधनों का प्रभावी उपयोग सुनिश्चित किया जा रहा है। राजस्थान के 72 लाख किसान बैंक खातों में 1400 करोड़ से अधिक की राशि का हस्तांरित की जा चुकी है। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) का लाभ देने से लेकर फसल ऋण का त्वरित वितरण सुनिश्चित किया गया है जिससे किसानों को प्रत्यक्ष राहत मिली है।

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट 2024 के उद्घाटन से पूर्व राजस्थान का प्राकृतिक दृश्य अद्भुत् था, मानो प्रकृति ने राज्य को भरपूर आशीर्वाद दिया है। छ: दशकों बाद हुई प्रचुर वर्षा ने न केवल बांधो और तालाबों को लबालब भर दिया, बल्कि कस्बों और गांवों की छवी भी बदल दी। सूखे से जूझते राजस्थान के हर गांव और ढाणी में जलाशयों के भरने से नई ऊर्जा का संचार हुआ, जैसे निवेशकों को आकर्षित करने की नींव प्रकृति ने रख दी हो। राज्य सरकार ने भी राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना 2024 के तहत स्टैंडर्ड सर्विसेज पैकेज में निवेश की सीमा 25 करोड़ एवं पर्यटन क्षेत्र में 10 करोड़ रूपये तय कर निवेशकों को अतिरिक्त प्रोत्साहन दिया। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने समिट से पूर्व दस संकल्प लिये, जिनमें सौर ऊर्जा का विस्तार, हस्तशिल्प एवं कला संस्कृति का संवर्द्धन, मिलेट फूड्स को बढ़ावा, विद्यार्थियों के वैश्विक अनुभव को प्रोत्साहन, न्यूनतम प्लास्टिक उपयोग, दिव्यांगों के लिए सम्मानजनक अवसर, विशिष्ट उत्पादों की पहचान, अपशिष्ट का पृथक्करण और नये रोजगार सृजन शामिल थे। इन प्रयासों का प्रभाव इतना व्यापक रहा कि राजस्थान में 35 लाख करोड़ रूपये से अधिक के एम.ओ.यू. सम्पन्न हुए। समिट में 32 देशों की सहभागिता ने राजस्थान की वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ किया, जिससे राज्य निवेश और व्यापार के नये अवसरों की दिशा में तेजी से अग्रसर हुआ।

युवाओं के प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकारों के नाकामी के कारण बेरोजगारी इतनी बढ़ गई थी कि आत्महत्या के मामलों में राजस्थान शीर्ष पर पहुंच गया था। इस निराशाजनक माहौल में युवाओं में आशा की किरण जगाने और उनकी ऊर्जा को सही दिशा देने की जरूरत थी। त्वरित कार्यवाही करते हुए सरकार ने एसआईटी का गठन कर पेपर लीक माफिया को जैल भेजा। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के इस संकल्प कि "आप मेहनत करो, अब एक भी पेपर लीक नहीं होगा" को युवाओं ने आत्म्सात कर लिया था। परिणामस्वरूप 1 जनवरी, 2024 से अब तक 146 परीक्षाएं बिना पेपर लीक के सम्पन्न कराई गई।

राजस्थान बजट 2025 में सवा लाख भर्तियों की घोषणा के साथ-साथ राजस्थान रोजगार नीति को 19वीं विधानसभा के सत्र में प्रस्तुत किया गया। अब युवाओं को सार्वजनिक नियुक्ति पत्रों के माध्यम से रोजगार के अवसर दिये जा रहे हैं। कौशल विकास और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए खनन, उद्यम, पर्यटन और आर्थिक नीतियों को सतत विकास के अनुरूप बनाया जा रहा है। महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में नारी को नारायणी मानकर राज्य सरकार ने संबल समृद्धि और सुरक्षा के लिए कई साहसिक निर्णय लिये। लखपति दीदी योजना के तहत 20 लाख से अधिक महिलाओं को जोड़ा गया जबकि लाडो प्रोत्साहन योजना में एक लाख बालिकाओं को 25 करोड़ का भुगतान कर आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित किया गया। उपमुख्यमंत्री श्रीमती दिया कुमारी ने सीमित संसाधनों के बावजूद प्रशासनिक कुशलता का परिचय देते हुए बीपीएल महिलाओं को 450 रूपये में गैस सिलेंडर उपलब्ध कराया और उधर 3500 करोड़ का "मां कोष" स्थापित किया। मातृत्व पोषण योजना के तहत 3.80 लाख लाभार्थियों को 140 करोड़ की राशि हस्तांतरित की गई। इसी क्रम में तृतीय श्रेणी की अध्यापिकाओं के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण लागू कर बाल शिक्षा को मातृत्व संरक्षण से जोड़ने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

इस क्रमबद्ध विकास ने राजस्थान के नव निर्माण की मजबूत नींव रखी है। 'आपणों अग्रणी राजस्थान' के संकल्प में महिला, युवा, किसान और मजदूरों के विकास को प्राथमिकता दी गई है। मजदूरों के कल्याण हेतु गरीबी मुक्त गांव योजना को ई-वर्क पोर्टल से जोड़ा गया, जिससे ई-गवर्नेंस को बढ़ावा मिल रहा है।

हाल ही में राजस्थान दिवस के अवसर पर 92 हजार से अधिक श्रमिकों को 100 करोड़ की प्रत्यक्ष आर्थिक सहायता दी गई और मुख्यमंत्री ने लाभार्थियों से संवाद किया। पी.एम. सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत 150 यूनिट निशुल्क बिजली देकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को राहत प्रदान की जा रही है। किसानों को जल, बिजली, बीज और बाजार तक समृद्ध करने का संकल्प लेकर राज्य सरकार खुशहाल किसान के स्वप्न को साकार कर रही है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत को सहजते हुए राजस्थान आत्मनिर्भर और विकसित राज्य बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। अब आवश्यकता है, जनजागृति के साथ राजस्थान के विकास के जयघोष की।

–डॉ. निमिषा गौड़,
सहायक आचार्य
कनोड़िया पी. जी. महिला महाविद्यालय, जयपुर।

राशिफल रविवार 30 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, रेवती नक्षत्र सायं 4:35 तक, ऐन्द्रयन योग सायं 5:54 तक, बव करण दिन 12:50 तक, चन्द्रमा आज सायं 4:50 से